टैटर-कोट

टैटर-कोट

समुद्र के किनारे एक विशाल महल में एक बूढ़ा अमीर रहता था, जिसकी न तो पत्नी थी और न ही बच्चे. उसकी केवल एक छोटी पोती थी जिसका चेहरा उसने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था. वो अपनी पोती से घृणा करता था, क्योंकि उसके जन्म के समय उसकी पसंदीदा बेटी मर गई थी; और जब बूढ़ी नर्स उस बच्ची को लाई, तो अमीर ने कसम खाई कि वो चाहे जिंदा रहे या मरे, लेकिन वो कभी भी उस बच्ची का चेहरा नहीं देखेगा.

फिर वो अपनी पीठ पीछे करके खिड़की में से बाहर के समुद्र को ताकता रहता था, और अपनी खोई हुई बेटी के लिए आंसू रोता बहाता रहता था. अंत में उसके सफेद बाल और दाढ़ी उसके कंधों से नीचे बढ़ गई और उसकी कुर्सी से लिपट गई और फर्श की झिरियों में घुस गई. और उसके आंसुओं ने गिर-गिर कर एक धार बनाई और फिर एक चैनल के ज़रिए वो विशाल समुद्र में जाकर मिल गए.

पर इस बीच, उसकी पोती की देखभाल करने को कोई नहीं था. बूढ़ी नर्स उसे कभी-कभी रसोई का बचा-खुचा खाना या फिर कुछ चिथड़े कपड़े पहनने को देती थी. जबकि महल के अन्य नौकर उसे "टैटर-कोट" बुलाकर उसका मज़ाक उड़ाते थे और उसके नंगे पैरों की ओर इशारा करते थे. वे मारपीट कर उसे महल से बाहर निकाल देते थे. फिर नंगे पैर टैटर-कोट रोती हुई बाहर भागती थी और झाड़ियों के बीच छिपने को मज़बूर होती थी.

फिर इस तरह टैटर-कोट बड़ी हुई. उसके पास खाने और पहनने के लिए बहुत कम होता था और वो खेतों और गलियों में घूमकर अपना दिन गुजारती थी. केवल एक गड़ेरिया उसका साथी था, जो अपनी छोटी बांसुरी पर मधुर धुनें बजाता था जिससे टैटर-कोट अपनी सारी भूख-प्यास, थकान और ठंड भूल जाती थी. फिर टैटर-कोट, अपनी सभी परेशानियां भूलकर संगीत पर नाचने लगती थी और उसके साथ-साथ बत्तखें भी नाचती थीं.

लेकिन, एक दिन, लोगों ने खबर सुनी कि सम्राट आ रहा था, और उसने पास के शहर में सभी अमीर लोगों को एक महाभोज का निमंत्रण दिया था. उस महाभोज में राजकुमार, जो सम्राट का एकमात्र पुत्र था अपने लिए एक पत्नी चुनने वाला था.

शाही निमंत्रण समुद्र के किनारे अमीर के महल में भी पहुंचा, और नौकरों ने उसे बूढ़े स्वामी को दिखाया, जो अभी भी अपनी खिड़की के पास बैठा था. उसके लंबे सफेद बाल, कुर्सी में लिपटे थे और उसके आँसुओं की छोटी नदी बह रही थी.

लेकिन जब अमीर ने सम्राट की आज्ञा सुनी, तो उसने अपनी आँखें सुखाईं और अपने बाल काटने को कहा जिनकी जकड़ से वो एक कैदी बन गया था और हिल-डुल नहीं सकता था. उसके बाद उसने अपने बेशकीमती कपड़े, और जवाहरात मंगाए और उन्हें पहना. फिर उसने सफेद घोड़े पर सोने और रेशम की काठी फिट करने का आदेश दिया, ताकि वो राजा से मिलने के लिए जा सके.

इस बीच टैटर-कोट ने भी शहर में हो रही इस बड़ी हलचल की खबर सुनी. वो रसोई के दरवाजे पर बैठकर रोती रही क्योंकि वो उस महाभोज में जा नहीं सकती थी. और जब बूढ़ी नर्स ने उसे रोते हुए सुना तो वो महल में गई, और उसने अमीर से प्रार्थना की, कि वो अपनी पोती को राजा के भोज और नृत्य में अपने साथ ज़रूर लेकर जाए.

पर अमीर उसपर चिल्लाया और उसने नर्स से चुप रहने को कहा, जबकि नौकरों ने हंसते हुए कहा: "टैटर-कोट अपने फटे कपड़ों में ही खुश है, वो दिन भर गड़ेरिये के साथ खेलती है, उसे यहीं छोड़ दें - उसके लिए यही बेहतर होगा."
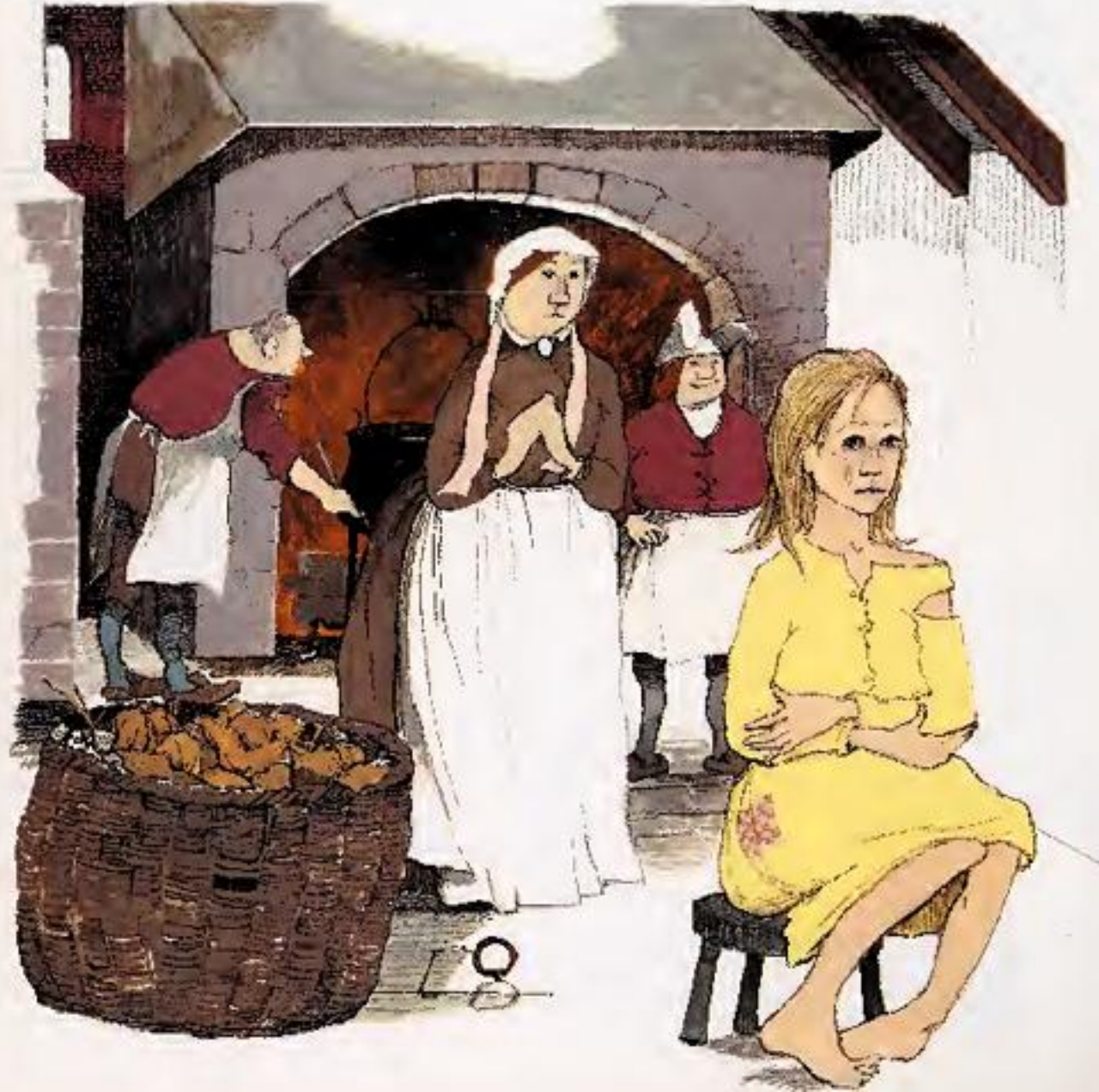
दूसरी, और फिर तीसरी बार, बूढ़ी नर्स ने अमीर से विनती की कि वो अपनी पोती को साथ में लेकर जाए. लेकिन नर्स को क्रोध और गालियां ही सुनने को मिलीं. अंत में अमीर के चाटुकार नौकरों ने नर्स को मारपीट कर और गालियां देते हुए महल से बाहर निकाल दिया.

अपनी असफलता पर रोते हुए, बूढ़ी नर्स टैटर-कोट की तलाश में गई; लेकिन तब तक लड़की को रसोइए ने दरवाजे के बाहर खदेड़ दिया था. टैटर-कोट अपने दोस्त गड़ेरिये को यह बताने के लिए भागी कि वो कितनी दुखी थी क्योंकि वो राजा के महाभोज और नृत्य में नहीं जा सकती थी.

लेकिन जब गड़ेरिये ने उसकी कहानी सुनी, तो उसने टैटर-कोट को खुश करने की कोशिश की. उसने कहा कि वे दोनों मिलकर राजा को देखने के लिए शहर जाएं, और वहां की सभी बढ़िया चीज़ों का आनंद लें. पर जब उसे टैटर-कोट अपने फटे कपड़ों और नंगे पैरों में दुखी दिखी, तो गड़ेरिए ने अपनी बांसुरी पर एक मनमोहक धुन बजाई. उससे टैटर-कोट अपने आँसू और अपनी परेशानियों के बारे में सब कुछ भूल गई. फिर गड़ेरिये ने टैटर-कोट का हाथ पकड़ा और वो दोनों ख़ुशी-ख़ुशी नीचे शहर की ओर जाने वाली सड़क पर नाचते हुए आगे बढ़े.
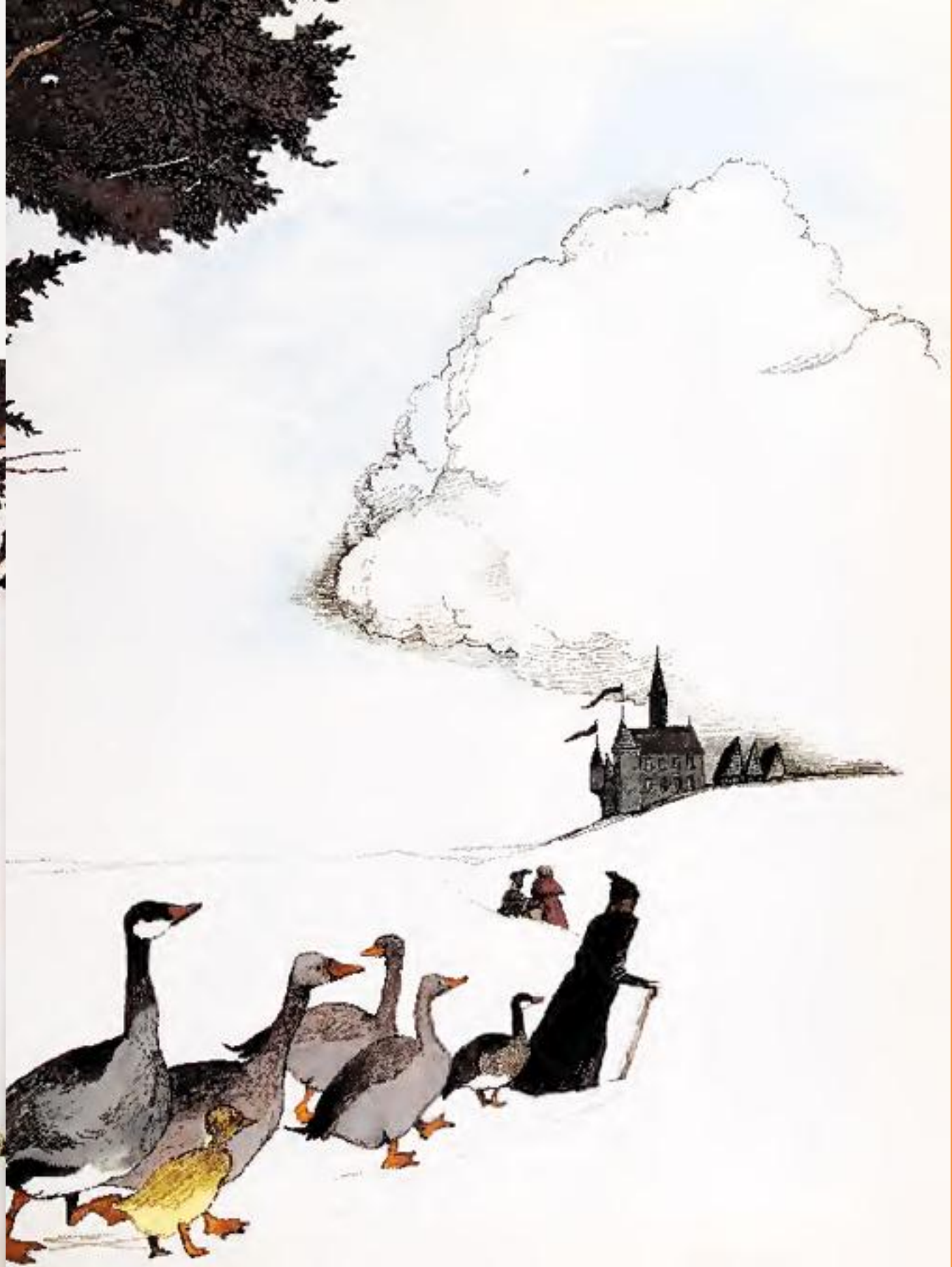
अभी वे कुछ ही दूर गए थे कि एक सुंदर युवक, शानदार कपड़े पहने, घोड़े पर सवार वहां आया और सम्राट के महल का रास्ता पूछने के लिए उनके पास आकर रुका. और जब उसने पाया कि वे भी वहीँ जा रहे थे, तो वो अपने घोड़े से उतरा और उनके साथ-साथ सड़क पर चलने लगा.

कुछ देर बाद गड़ेरिए ने अपनी बांसुरी बाहर निकालकर एक मधुर धुन बजाई. अजनबी ने टैटर-कोट के प्यारे चेहरे को निहारा और वो एकदम उसके प्रेम में पड़ गया. उसने टैटर-कोट से शादी करने की भीख माँगी.

लेकिन टैटर-कोट केवल हंसी, और उसने अपने सुनहरे सिर को हिलाया.

"यदि आप अपनी पत्नी के लिए एक गड़ेरिए की लड़की चुनेंगे तो आपके लोगों को शर्म आएगी!" उसने कहा; "आप आज रात को सम्राट के महाभोज और नृत्य में किसी शाही लड़की को प्रस्ताव दें और मुझ जैसी गरीब लड़की को परेशान न करें."

लेकिन जितना अधिक टैटर-कोट ने मना किया उतनी ही मधुर धुन बजी, और उतना ही गहरा वो युवक टैटर-कोट के प्यार में डूबा. आख़िर में उसने अपनी ईमानदारी के प्रमाण के रूप में, टैटर-कोट को राजा के महाभोज में रात को बारह आने का निमंत्रण दिया. उसने कहा की टैटर-कोट, गड़ेरिए और अपनी बत्तखों के साथ, उन्हीं फटे कपड़ों में, नंगे पैर महल में आए. फिर वो युवक राजा और सभी अमीर लोगों के सामने उसके साथ नृत्य करेगा, और उसे अपनी प्रिय और सम्मानित

फिर रात हुई, और महल प्रकाश और संगीत से जगमगा उठा. जब सम्राट के सामने तमाम अमीर और महिलाएं नाचने लगे तब जैसे ही घड़ी में बारह बजे टैटर-कोट, गड़ेरिया, और बत्तखों ने शोरगुल करते हुए महल में प्रवेश किया, और वे सीधे बॉलरूम (नृत्यगृह) में गए. उन्हें देख दोनों तरफ खड़ी अमीर महिलायें आपस में फुसफुसाने लगीं, और दूर बैठे सम्राट विस्मय में इस पल्टन को घूरते रहे.

लेकिन जैसे ही वे सिंहासन के सामने आए, टैटर-कोट का प्रेमी राजकुमार, राजा की बगल से उठा, और उससे मिलने आया. उसने उसका हाथ थामा और सबके सामने उसे तीन बार चूमा और फिर उसने सम्राट की ओर रुख किया.

"पिताजी!" उसने कहा, क्योंकि वो खुद राजकुमार था, "मैंने अपनी पसंद की लड़की चुन ली है, और यह मेरी दुल्हन है. वो पूरे देश की सबसे सुन्दर लड़की है, और सबसे प्यारी भी!"

इससे पहले कि राजकुमार बोलना बंद करता, गड़ेरिये के लड़के ने अपनी बांसुरी पर एक धुन बजानी शुरू की जो कि एक जंगल में पक्षी के संगीत जैसी लग रही थी. और जब बांसुरी की मधुर धुन बजी तो टैटर-कोट के फ़टे कपड़े चमचमाते रत्नों से जड़ित रेश्मीन वस्त्रों में बदल गए उसके सिर पर एक सुनहरा मुकुट आ गया और उसके पीछे बत्तखों का झुंड सुन्दर और मँहगे कपड़े पहने बराती बन गए.
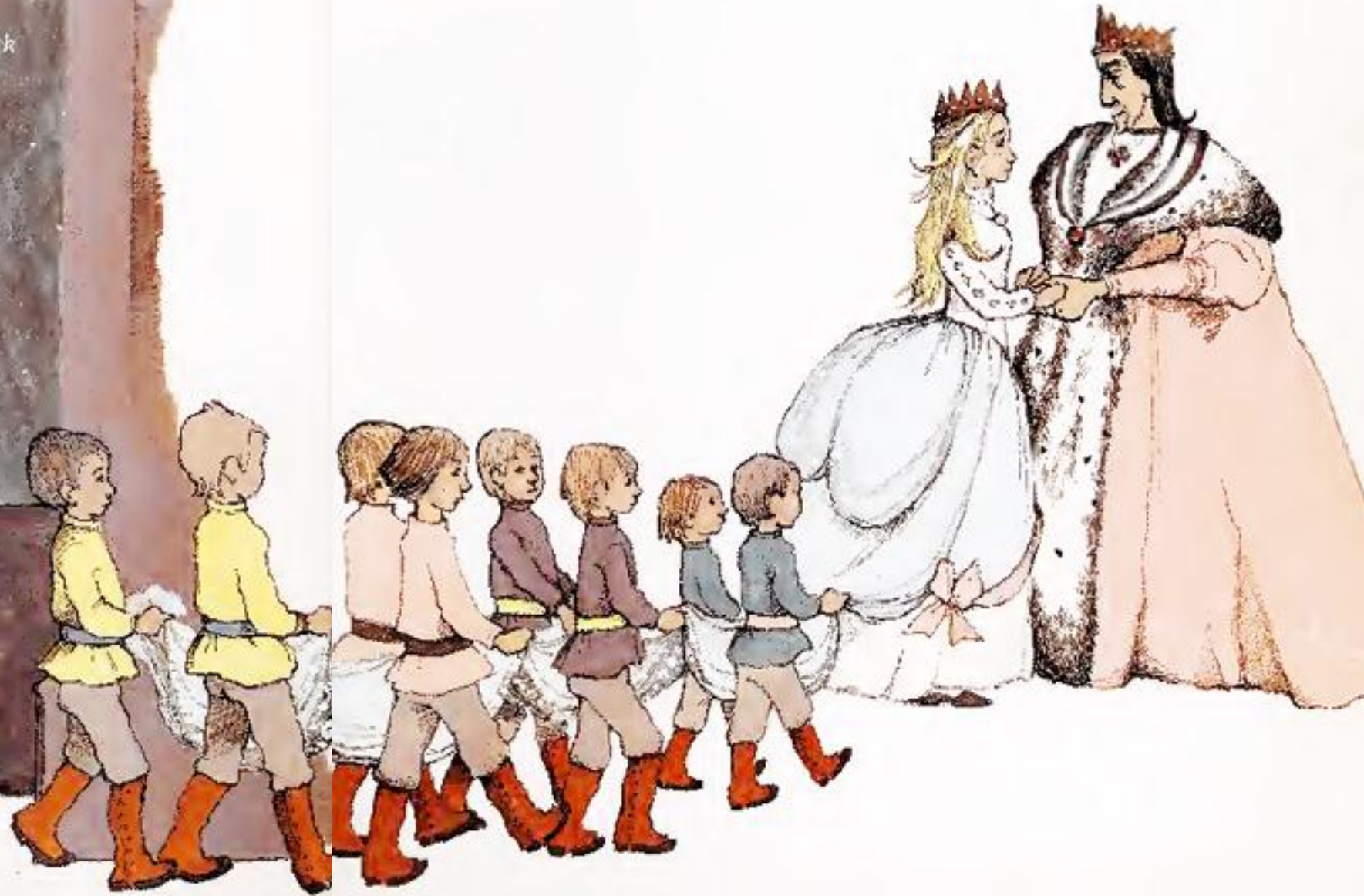
सम्राट ने टैटर-कोट को अपनी बेटी के रूप में स्वीकार किया और वो उसका अभिवादन करने के लिए उठे. तुरंत शाही बैंड ने ढोल-नगाड़ो से नई राजकुमारी के सम्मान में संगीत बजाया और बाहर के लोगों ने एक-दूसरे से कहा :

"ज़रा देखो! राजकुमार ने अपनी पत्नी के लिए देश की सबसे प्यारी लड़की चुनी है!"

लेकिन उसके बाद बत्तखों का झुंड फिर कभी नहीं दिखाई दिया, और न ही किसी को यह पता चला कि उनका क्या हुआ. उसके बाद वो बूढ़ा अमीर समुद्र के किनारे अपने महल में एक बार फिर वापिस चला गया, क्योंकि उसने अपनी पोती का चेहरा कभी न देखने की शपथ जो ली थी.

वो वहाँ अभी भी अपनी खिड़की के पास ही बैठा है. अगर आप कभी उससे मिलेंगे तो आप पाएंगे कि वो समुद्र की ओर मुंह करके पहले से भी अधिक ज़ोर से रो रहा होगा!

समाप्त